INDIAN SCHOOL AL WADI AL KABIR

Class: X	Department: Hindi	Date – 24.10.24
QB	Topic: पतझर में टूटी पत्तियाँ	Note: Pl. file in portfolio

1. शुद्ध सोना और गिन्नी का सोना अलग क्यों होता है?

उत्तर: शुद्ध सोना पूरी तरह शुद्ध होता है । वह चौबीस (24) कैरेट का होता है । इस सोने में किसी अन्य धातु की मिलावट नहीं होती । गिन्नी के सोने में ताँबा मिला होता है। वह बाईस (22) कैरेट सोना होता है । ताँबे की इसी मिलावट के कारण शुद्ध सोने की तुलना में गिन्नी का सोना अधिक मज़बूत और उपयोगी होता है। वह शुद्ध सोने की अपेक्षा ज़्यादा चमकता है । औरतें अक्सर इसी सोने के गहने बनवाती हैं ।

2. प्रैक्टिकल आइडियलिस्ट किसे कहते हैं?

उत्तर: जो लोग शुद्ध आदर्श में थोड़ी व्यावहारिकता मिलाकर काम चलाते हैं, उन्हें प्रैक्टिकल आइडियलिस्ट कहते हैं। ऐसा व्यक्ति समाज के संचालन हेतु आदर्श और व्यावहारिकता के सही संयोग से अपने सिद्धांतों तथा अपनी नीतियों का निर्माण करता है । इस दृष्टि से गांधीजी सच्चे अर्थ में प्रैक्टिकल आइडियलिस्ट थे क्योंकि वे व्यावहारिकता में आदर्शों को मिलाकर ऐसी नीतियों का निर्माण करते थे, जिनमें पूरी तरह से सामाजिक हित निहित होता था ।

3. पाठ के संदर्भ में शुद्ध आदर्श क्या है?

उत्तर: शुद्ध आदर्श वैसा आचार-विचार है, जिसने इसका पालन करने वालों का उत्थान तो किया ही है, साथ में अन्य लोगों का भी उत्थान किया है। पाठ में शुद्ध आदर्श की तुलना शुद्ध सोने से की गई है क्योंकि जिस प्रकार शुद्ध सोना गिन्नी के सोने की अपेक्षा अधिक मूल्यवान होता है, उसी प्रकार शुद्ध आदर्श भी व्यावहारिकता की अधिकता वाले कथित आदर्शों से अधिक उपयोगी होते हैं और चरित्र को विभूषित कर देते हैं।

4. लेखक ने जापानियों के दिमाग में 'स्पीड' का इंजन लगने की बात क्यों कही है?

उत्तर: जापानी तीव्र गति से प्रगति करना चाहते हैं । एक महीने के काम को एक दिन में पूरा करना चाहते हैं । जापानियों ने अमेरिका से प्रतिस्पर्धा के चक्कर में अपने दिमाग को और तेज़ दौड़ाना शुरू कर दिया ताकि जापान हर मामले में अमेरिका से आगे निकल सके। इसलिए वे शारीरिक एवं मानसिक रूप से बीमार रहने लगे हैं । कार्य की अधिकता के कारण ऐसा लगता है कि अब वहाँ कोई चलता नहीं बल्कि दौड़ता है, कोई बोलता नहीं, बकता है । जब वे अकेले पड़ जाते हैं, तो वे स्वयं से ही बड़बड़ाने लगते हैं । उन्होंने स्वयं को विकसित देशों की पहली पंक्ति में लाने की ठान ली है । इसलिए लेखक ने जापानियों के दिमाग में 'स्पीड' का इंजन लगने की बात कही है।

5. जापान में चाय पिलाने की विधि को क्या कहते हैं? उसकी क्या विशेषता है ?

उत्तर: जापान में चाय पिलाने की विधि को चा-नो-यू कहते हैं । इसकी विशेषता यह है कि वहाँ असीम शांति होती है । यहाँ तक कि सन्नाटा भी गूँजता है । लेखक ने वहाँ की पवित्रता और शांति की तुलना जयजयवंती से की है । इसमें दिमाग़ की रफ़्तार बिलकुल धीमी पड़ जाती है और दिलोदिमाग़ को बहुत सुकून मिलता है । लोग भूत और भविष्य काल को भूलकर वर्तमान में जीने लगते हैं । चाय पिलाने की इस विधि के द्वारा मानसिक बीमारियों की संख्या पर रोक लगी है । जापान के लोग एवं अन्य भी इस विधि का ख़ूब लाभ उठाते हैं ।

6. जापान में जहाँ चाय पिलाई जाती है, उस स्थान की क्या विशेषता है?

उत्तर: जापान में जहाँ चाय पिलाई जाती है, वहाँ ग़ज़ब की शांति होती है। माहौल इतना शांत होता है कि पानी के खदबदाने की आवाज़ भी सुनाई देती है। वहाँ केवल तीन लोगों को प्रवेश दिया जाता है । इसका उद्देश्य यही होता है कि दिमाग़ शांत हो । यहाँ व्यक्ति को लगता है कि वह अनंतकाल में जी रहा है ।

7.शुद्ध आदर्श की तुलना सोने से और व्यावहारिकता की तुलना ताँबे से क्यों की गई है ?
उत्तर- आदर्श, समाज के लिए उपयोगी होते हैं। इनका समाज के उत्थान में विशेष योगदान होता है। इसके विपरीत व्यावहारिकता में केवल अपना विकास व अपने हित की भावना दिखाई देती है। शुद्ध सोना बहुत कीमती होता है बल्कि ताँबा नहीं। इसीलिए आदर्श की तुलना सोने से और व्यावहारिकता की तुलना ताँबे से की गई है।

8.चाजीन ने कौन-सी क्रियाएँ गरिमापूर्ण ढंग से पूरी कीं, जिनसे लेखक प्रभावित हुआ ?
उत्तर -चाजीन ने बड़े अदब से मेहमानों का स्वागत किया। उन्हें देखकर वह खड़ा हो गया और उसने कमर झुकाकर प्रणाम किया। दो....झो....(आइए, तशरीफ़ लाइए) कहकर स्वागत किया। उन्हें बैठने की जगह दिखाई। फिर उसने अँगीठी जलाई और उसपर चायदानी रखी। बगल के कमरे में जाकर कुछ बरतन ले आया।तौलिए से बर्तन साफ़ किए। ये सारी क्रियाएँ उसने गरिमापूर्ण ढंग से पूरी कीं। ऐसा लगा कि वहाँ जयजयवंती के स्वर गूँज रहे हों। वहाँ का वातावरण अत्यंत शांत था और लेखक इससे प्रभावित हुआ।

9. 'टी-सेरेमनी'- में कितने आदमियों को प्रवेश दिया जाता था और क्यों ?
उत्तर - 'टी-सेरेमनी' में शांति मुख्य बात होती है इसलिए वहाँ तीन से अधिक आदमियों को प्रवेश नहीं दिया जाता। वहाँ इतनी शांति होती है कि चायदानी के पानी का खदबदाना भी सुनाई देता है। टी-सेरेमनी का उद्देश्य यही होता है कि दिमाग की रफ़्तार धीमी हो जाए और मन को चैन मिले।

10.चाय पीने के बाद लेखक ने स्वयं में क्या परिवर्तन महसूस किया ?
उत्तर- चाय पीने के बाद लेखक के मन को अपार शांति महसूस हुई। उसे लगा कि उसके दिमाग की रफ़्तार बंद हो चुकी है । उसे एहसास होने लगा कि भूत और भविष्य दोनों मिथ्या हैं। उसको लगा कि वह अनंतकाल में जी रहा है। यहाँ तक कि उसे सन्नाटा भी सुनाई देने लगा। इस प्रकार टी-सेरेमनी ने उसे जीवन जीने की कला सिखा दी।

11.गांधीजी में नेतृत्व की अद्भुत क्षमता थी - उदाहरण सहित इस बात की पुष्टि कीजिए-
उत्तर - गांधीजी ने अफ्रीका में अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ़ लोगों को इकट्ठा किया था। फिर भारत आकर अंग्रेजों के खिलाफ़ आवाज़ उठाई। गांधीजी के अथक प्रयासों के कारण पूरे भारत की जनता उनके साथ हो गई थी। उन्होंने सत्याग्रह आंदोलन, असहयोग आंदोलन, दांडी मार्च और भारत छोड़ो जैसे आंदोलनों का नेतृत्व किया तथा सत्य और अहिंसा जैसे शाश्वत मूल्य समाज को दिए। भारतीयों ने गांधीजी के नेतृत्व से आश्वस्त होकर उन्हें पूर्ण सहयोग दिया। इस प्रकार स्वतंत्रता आंदोलन की सफलता से पता चलता है उनमें नेतृत्व की अद्भुत क्षमता थी।

12.आपके विचार में कौन-से ऐसे मूल्य हैं, जो शाश्वत हैं ? वर्तमान समय में इन मूल्यों की प्रासंगिकता स्पष्ट कीजिए-
उत्तर - शाश्वत मूल्य वे होते हैं जो पौराणिक समय से चले आ रहे हों, वर्तमान में भी हमारे समाज में बस गए हों तथा भविष्य में भी हमारा दिशा-निर्देशन करने में सहायक हों। सत्य, अहिंसा, उदारता, त्याग, दया, सहानुभूति, भाईचारा, एकता जैसे मूल्य शाश्वत मूल्य हैं। वर्त्तमान समय में इन मूल्यों की प्रासंगिकता बनी हुई है। इन मूल्यों में गिरावट के कारण ही समाज का नैतिक पतन हुआ है। लेकिन जो लोग वाकई सफलता के शिखर पर पहुँचे हैं, उनके उदाहरण से हम देख सकते हैं कि आदर्श आज भी उतना ही महत्त्वपूर्ण हैं , जितना पहले हुआ करते थे।

13. लेखक के मित्र ने जापानियों में मानसिक रोग के क्या-क्या कारण बताए?आप इन कारणों से कहाँ तक सहमत हैं ?
उत्तर - जापान में लोगों के जीवन की रफ़्तार बढ़ गई है। यहाँ कोई चलता नहीं बल्कि दौड़ता है। कोई बोलता नहीं, बकता है। ये अमेरिका से प्रतिस्पर्धा करने लगे। एक महीने का काम एक दिन में करने का प्रयास करते हैं। इससे वे तनावपूर्ण जिंदगी बिताने लगते हैं और इनका मानसिक संतुलन बिगड़ जाता है। इन्हीं कारणों से जापान के अस्सी

फ़ीसदी लोग मनोरुग्ण हैं । मैं इन कारणों से पूरी तरह सहमत हूँ क्योंकि मन को स्वस्थ रखने के लिए उसे शांत और तनावमुक्त रखना आवश्यक है ।

14.लेखक के अनुसार सत्य केवल वर्तमान है, उसी में जीना चाहिए । लेखक ने ऐसा क्यों कहा होगा ? स्पष्ट कीजिए-

उत्तर - लेखक कहते हैं कि अक्सर हम या तो गुज़रे हुए दिनों की यादों में उलझे रहते हैं या भविष्य के बारे में सोचकर तनाव पालते हैं । हम या तो भूतकाल में रहते हैं या भविष्यकाल में । असल में दोनों काल मिथ्या है । एक चला गया है, दूसरा आया नहीं है । हमारे सामने जो वर्तमान समय है, वही सत्य है । हमें वर्तमान में जीना चाहिए । वर्तमान में जीना सीखने से ही सही सुख मिलता है ।

****